पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित 16.04.2016 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालयः आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाषः 9810117464, 9868051444

सादर निमन्त्रण

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्
शिविर तैयारी कार्यकर्ता बैठक
रविवार, 24 अप्रैल, सायं 3 बजे
सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन
आसिफ अली रोड़, नई दिल्ली
सभी साथी समय पर पंहुचे
—अनिल आर्य

वर्ष-32 अंक-20 चैत्र-2073 दयानन्दाब्द 192 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2016 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशितः 16.04.2016 E-mail:aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website: www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का शिक्षक शिविर सोल्लास सम्पन्न

आदर्श युवकों का निर्माण आज की आवश्यकता —बिमल कुमार दूबे,आई.ए.एस.

रविवार, 10 अप्रैल 2016,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में ''आर्य व्यायाम शिक्षक शिविर'' का भव्य आयोजन गुरूकुल खेड़ाखुर्द,दिल्ली में किया गया । जिसमें 43 शिक्षक प्रशिक्षित किये गये । शिविर का उद्घाटन गुरूकुल के प्रधान चौ.ब्रह्मप्रकाश मान ने ओ३म् ध्वज फहरा कर किया । आचार्य सुंधाशु जी,गुरूकुल के मन्त्री मनोज मान,भारतेन्द्र मासूम,मुख्य अतिथि श्री ओम सपरा(प्रधान,उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) ने भी अपने विचार रखे । समारोह की अध्यक्षता श्री पी.डी.शर्मा(पूर्व ए.सी.पी.) ने की । संचालन डा.अनिल आर्य ने किया । उपरोक्त चित्र में—श्री ओम सपरा का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,मनोज मान,चौ.ब्रह्मप्रकाश मान,पी.डी.शर्मा व द्वितीय चित्र में—समापन समारोह में श्री बिमल कुमार दूबे (आई.ए.एस.) का स्वागत करते दुर्गेश आर्य,मनोज मान,अनिल आर्य । श्री बिमल दूबे ने कहा कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता चरित्रवान देश भक्त युवा पीढ़ी का निर्माण करने की है,परिषद् का इस दिशा में प्रयास सराहनीय है । प्रधान शिक्षक श्री सूर्यदेव आर्य (जीन्द) के निर्देशन में प्रशिक्षण दिया गया व श्री सौरभ गुप्ता ने कुशल संयोजक की भूमिका निभायी । आचार्य महेन्द्र भाई,सन्तोष आर्या(करनाल) ने बौद्विक प्रदान किया । प्रमुख रूप से विश्वनाथ आर्य,धर्मपाल आर्य,वेदप्रकाश आर्य,रामकुमार सिंह,योगेन्द्र शास्त्री,दुर्गाप्रसाद शर्मा, (फरीदाबाद),मनोज आर्य,संजय आर्य,प्रणवीर आर्य,आशीष आर्य,नन्दलाल शास्त्री,कमल आर्य,नरेश पहलवान आदि उपस्थित थे । अरूण आर्य,जितेन्द्र आर्य,विमल आर्य ने व्यवस्था सम्भाली ।

शिविर समापन पर मंच पर बांये से—रामकुमारसिंह, डा.अनिल आर्य,बिमल कुमार दूबे,मनोज मान, द्वितीय चित्र में प्रशिक्षित शिक्षक गण।

गुरूकुल खेड़ाखुर्द दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 3 अप्रैल 2016,गुरूकुल खेड़ाखुर्द दिल्ली का वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ । चित्र में—मुख्य अतिथि श्री अशोक सचदेव(टोयटा ऐजन्सीज),चौ.ब्रह्मप्रकाश मान,डा.अनिल आर्य,मनोज मान आदि । द्वितीय चित्र—पूर्व लोक सभा अध्यक्ष डा.बलराम जाखड़ की स्मृति में वृक्षारोपण किया गया,चित्र में—चौ.ब्रह्मप्रकाश मान,डा.अनिल आर्य,मनोज मान व प्रणवीर आर्य आदि । कुशल संचालन आचार्य सुधांशु ने किया ।

'सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति के पुनरुद्धार में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का योगदान'

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

भारतीय धर्म व संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, आदिकालीन, सर्वोत्कृष्ट, ईश्वरीय ज्ञान वेद और सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों पर आधारित है। सारे विश्व में यही संस्कृति महाभारत काल व उसकी कई शताब्दियों बाद तक भी प्रवृत्त रहने सहित सर्वत्र फलती—फूलती रही है। इस संस्कृति की विशेषता का प्रमुख कारण यह था कि यह ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के साथ वेदों के प्रचारक व रक्षक ईश्वर के साक्षात्कृत धर्म हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रचारित व संरक्षित थी। महाभारत के विनाशकारी युद्ध के प्रभाव से ऋषि परम्परा समाप्त हो गई जिससे संसार में धर्म व संस्कृति सहित शिक्षा के क्षेत्र में घोर अन्धकार छा गया। इस विषम परिस्थिति में देश—देशान्तर में वही हुआ जैसा कि नेत्रान्ध व अल्प नेत्र ज्योति वाले अशिक्षित व्यक्तियों के कार्य होते हैं। यह अन्धकार समाप्त नहीं हो रहा था अपितु समय के साथ बढ़ रहा था। इस स्थिति में हम देखते हैं कि देश—देशान्तर में कुछ महापुरुषों का जन्म हुआ जिन्होंने समाज को नई दिशा देने के लिए सामयिक ज्ञान की अपनी योग्यतानुसार अपने—अपने मत व धर्म प्रचलित किये और इन्हीं मत व धर्मों के पालन के लिए उन—उन देशों में, मुख्यतः यूरोप व अरब आदि देशों में, वहां की भौगोलिक एवं समाज के पुरुषों की योग्यता के अनुसार संस्कृति का प्रादुर्भाव व विकास हुआ। भारत में सृष्टि के आदि काल से लेकर महाभारत काल तक वैदिक धर्म व संस्कृति प्रचलित रही थी। समाज में अज्ञान बढ़ जाने से इसका विपरीत प्रभाव धर्म व संस्कृति दोनों पर हुआ जिस कारण संस्कृति का स्वरुप भी सत्य के विपरीत अज्ञान प्रधान होकर अनेक विकारों से युक्त हुआ।

संस्कृति का अध्ययन करने के लिए हमें धर्म, भाषा, स्वदेश गौरव की भावना, वेशभूषा, परम्परा वा रीति—रिवाजों आदि की स्थिति पर विचार और इसमें महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान की चर्चा करना उपयुक्त होगा। धर्म के क्षेत्र में भारत सृष्टि के आदि काल से वेद और वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों का पालक रहा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण सत्य मान्यताओं, यथार्थ धर्म व संस्कृति के पोषक रहे हैं। हमारे ऋषि—मुनि भी विचार, चिन्तन, ध्यान व मनन द्वारा वेदों के सभी मन्त्रों व शब्दों में निहित मनुष्यों के लिए कल्याणकारी अर्थों व ज्ञान से देश की जनता को उपकृत करते थे जिससे सारा समाज व देश सत्य ज्ञान से युक्त व उन्नत था। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से सभी मनुष्यों व वर्णों की सन्तानों को गुरुकुलीय शिक्षा दी जाती थी जहां निर्धन व धनवानों के लिए वेद—वेदांगों के ज्ञान कराने वाली शिक्षा का सबके लिए समान रूप से निःशुल्क प्रबन्ध था। स्वामी दयानन्द ने प्रत्येक व्यक्ति के लिए शिक्षा को अनिवार्य करने की बात कही है। कृष्ण व सुदामा एक साथ पढ़ते थे और परस्पर मित्रवत् व्यवहार करते थे। वैदिक काल के सभी आचार्य व गुरु भी वैदिक ज्ञान के प्रबुद्ध विद्वान होते थे जिनके आचार्यत्व में विद्यार्थियों से नास्तिकता का नाश होकर एक सच्चे सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता ईश्वर की उपासना देश देशान्तर में प्रचलित थी। सभी स्त्री व पुरुष स्वाध्यायशील व योगाभ्यासी होते थे जिससे सभी स्वस्थ, सुखी, अपरिग्रही व सन्तोशी होते थे। समाज व देश में ऋषि—मुनियों की बड़ी संख्या होने से कहीं कोई अज्ञान व अन्धविश्वास उत्पन्न व प्रचलित नहीं होता था। शंका होने पर राजाओं के द्वारा बड़े—बड़े शास्त्रार्थों का आयोजन होता था और विजयी पक्ष के विचारों को समस्त देश को स्वीकार करना पड़ता था। धर्मनिरपेक्षता जैसा शब्द महाभारत काल तक व उसके बाद के साहित्य में भी कहीं नहीं पाया जाता। इस प्रकार सर्वत्र वैदिक धर्म का पालन होता था।

महाभारत काल के बाद मध्यकाल में अज्ञान व अन्धविश्वासों के उत्पन्न हो जाने से धर्म का सत्य स्वरूप विकृत हो गया जिससे समाज में अवतारवाद, मूर्तिपजा, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष, पाखण्ड व आडम्बर, जन्मना जातिवाद आदि मिथ्या विश्वास उत्पन्न हो गये। महर्षि दयानन्द (1825—1883) तक इन मिथ्या विश्वासों में वृद्धि होती रही। स्वामी दयानन्द जी को सन् 1938 की शिवरात्रि को ईश्वर विषयक बोध प्राप्त हुआ। इसके कुछ काल बाद उनसे छोटी बहिन व चाचा की मृत्यु ने उनमें वैराग्य के संस्कारों को प्रबुद्ध किया। उन्होंने सत्य धर्म व संस्कृति की खोज के लिए सन् 1846 में माता—पिता व स्वगृह का त्याग कर देश भर के धार्मिक विद्वानों, शिक्षकों व योगियों को ढूंढ कर उनकी संगति व शिष्यत्व प्राप्त किया। मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरू स्वामी विरजानंद सरस्वती के पास वह सन् 1860 में पहुंचे और उनसे तीन वर्षों में संस्कृत के आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी—महाभाष्य व निरुक्त संस्कृत—व्याकरण प्रणाली का ज्ञान प्राप्त कर समस्त वैदिक व इतर धार्मिक साहित्य के विद्वान बने। गुरु की प्रेरणा से उन्होंने संसार से मिथ्या ज्ञान नष्ट करने के साथ आर्ष ज्ञान व सत्य सनातन वैदिक मत एवं संस्कृति के प्रचार व स्थापना का कार्य किया। इस कार्य को सम्पादित करने के लिए ही उन्होंने देश का भ्रमण कर न केवल धर्मोपदेश व शास्त्रार्थ आदि ही किये अपितु आर्यसमाज की स्थापना सहित पंचमहायज्ञविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय का प्रणयन किया औरे साथ हि चारों वेदों का संस्कृत व हिन्दी में भाष्य का अभूतपूर्व सराहनीय कार्य भी आरम्भ किया। वह यजुर्वेद का पूर्ण व ऋग्वेद का आंशिक भाष्य ही कर पाये। उनके इन कार्यों ने धर्म व संस्कृति के सुधार व उन्नति का अपूर्व कार्य किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ लिख कर व उसमें देश व देशान्तर के प्रायः सभी मतों की समीक्षा कर वैदिक सनातन मत को वास्तविक व यथार्थ धर्म सिद्ध व घोषित किया। उनकी चुनौती उनके जीवनकाल व बाद में भी कोई स्वीकार नहीं कर सका जिस कारण से आज भी वेद धर्म सर्वोपरि महान व संसार के सभी लोगों के लिए आचरणीय बन गया है। महर्षि दयानन्द के समय व उनसे पूर्व ईसाई व इस्लाम के अनुयायी हिन्दुओं के धर्म—परिवर्तन का आन्दोलन चलाये हुए थे। बहुत बड़ी संख्या में उन्होंने सफलता भी प्राप्त की थी परन्तु स्वामी दयानन्द के कार्यों ने उनके धर्मान्तरण के कार्यपर प्रायः पूर्ण विराम लगा दिया। यदि हिन्दुओं ने उनकी वेद विषयक सत्य विचारधारा को अपना लिया होता तो आज देश का इतिहास कुछ नया व भिन्न होता। पतन को प्राप्त हो रहे वैदिक धर्म की रक्षा के लिए उनके द्वारा किया गया कार्य अपूर्व एवं महान है।

महर्षि दयानन्द ने स्वभाषा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह वेदों की संस्कृत को विश्व की सभी भाषाओं की जननी मानते थे और उसके अधिकारी विद्वान व प्रचारक हुए। इसके लिए उन्होंने वेदांग प्रकाश नाम से संस्कृत व्याकरण के अनेक ग्रन्थ भी लिखे हैं। गुजराती होते हुए भी उन्होंने गुजराती के प्रति कभी पक्षपात नहीं किया। वह प्रचार आरम्भ करने के समय से ही संस्कृत में व्याख्यान देते थे जो सरल सुबोध व मुहावरेदार होती थी जिसे संस्कृत न जानने वाले लोग भी समझ लेते थे। उनके वार्तालाप की भाषा भी यही भाषा थी। कालान्तर में उन्होंने हिन्दी भाषा को अपनाया और इसे आर्यभाषा का नाम दिया। बहुत कम समय में आपने हिन्दी सीख ली और हिन्दी में ही व्याख्यान, वार्तालाप व लेखन कार्य करने लगे। हिन्दी के प्रचार व प्रसार के लिए आपने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे व प्रकाशित किये। आपने अपने ग्रन्थों का उर्दू आदि भाषाओं में अनुवाद करने की अनुमति इस कारण नहीं दी कि इससे हिन्दी का प्रचार व प्रसार पर विपरीत प्रभाव हो सकता था। इस सन्दर्भ में उन्होंने यहां तक कह दिया था कि जो व्यक्ति इस देश में उत्पन्न होकर और यहां का अन्न आदि खा कर यहां की सरल भाषा हिन्दी को नहीं सीख सकता उससे देश के हित के लिए और क्या उम्मीद की जा सकती है? भारत के सरकारी दफतरों में काम काज की भाशा तय करने के लिए अंग्रेजों ने जब एक कमीशन बनाया तो हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा स्वीकार कराने के लिए स्वामी दयानन्द जी ने देश भर में एक हस्ताक्षर अभियान चलाया और उस पर करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर कराये। हस्ताक्षर अभियान चलाकर सरकार से अपनी बात स्वीकार कराने वाले शायद स्वामी दयानन्द भारत के प्रथम महापुरुष थे। ऐसा ही अभियान उन्होंने गोरक्षा अथवा गोहत्या बन्द कराने के लिए भी चलाया था। महर्षि दयानन्द के कार्यों से देश में हिन्दी भाषा का अपूर्व प्रचार हुआ जिसका प्रभाव उनके समकालीन व परवर्ती संस्कृत व हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा। इस विषय पर शोधार्थियों ने शोध प्रबन्ध भी प्रस्तुत किये हैं। स्वभाषा संस्कृत व हिन्दी के प्रचार व प्रसार में स्वामी दयानंद जी का सर्वाधिक योगदान है।

मनुष्यों की वेशभूषा भी किसी संस्कृति का एक आवश्यक अंग होती है। भारत में प्राचीन काल से ही पुरुषों व स्त्रियों की वेशभूषा निर्धारित है। पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता, लोई वा शाल सहित बन्द गले का कोट व जैकेट एवं सिर पर पगड़ी निर्धारित रही है। इसी प्रकार से स्त्रियों के लिए भी बचपन में फ्राक से आरम्भ कर किशोर, युवावस्था व उसके बाद शलवार, कुर्ता, चुन्नी वा दुपट्टा, साड़ी आदि का पहनावा प्रचलन में रहा है। भौगोलिक दूरियों के कारण इनमें कुछ न्यूनाधिक परिवर्तन आदि भी देखने को मिलता है जिसमें एक ही मूल भावना काम करती दिखाई देती है। वेशभूषा विषयक भारतीय चिन्तन फैशन न होकर शरीर की रक्षा व सभ्यता का सूचक होता है जिससे किसी के मन में किसी प्रकार विकार आदि उत्पन्न न हो। 8वीं शताब्दी से भारत में मुगलों का आना आरम्भ हुआ और उन्होंने अपने धर्म, भाशा व वेशभूशा आदि थोपने में कोई कसर नहीं रखी। उसके बाद अंग्रेज आये और देश को गुलाम बनाया। उन्होंने भी अपने ईसाई धर्म, अंग्रेजी भाशा व परम्पराओं का प्रचार व प्रसार किया। हमारे देश के लोग अंग्रेजों से कुछ अधिक ही प्रभावित हो गये और आज भी इनकी ही वेशभूषा का प्रचलन देश भर में देखने को मिलता है। भारतीय वेशभूषा का प्रचलन कम हो रहा है और विदेशी यूरोपीय वेशभूषा का प्रचलन बढ़ रहा है। महर्षि दयानन्द ने भारतीय धर्म, संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जगाया तो इसमें भारतीय वेशभूषा पर भी ध्यान केन्द्रित रखा। वह सदैव धोती का प्रयोग करते थे। भारतीय कुर्ते में भी उनके चित्र उपलब्ध है। सम्मान की निशानी सिर पर पगड़ी का भी वह प्रयोग करते थे और यदि ऊपर का उनका भाग वस्त्रहीन है, तो वह प्रायः शाल या लोई ओढ़ते थे। उनके जीवन में प्रसंग आता है कि एक बार उनका एक अनुयायी अपने पुत्र को उनके पास लाया और उसके सुधार के लिए स्वामी जी को उस युवक उपदेश देने को कहा। स्वामी जी ने देखा कि उस युवक ने विदेशी वेशभूषा पैण्ट—शर्ट पहन रखी है। इसका उल्लेख कर उन्होंने उस बालक को अपने पूर्वजों की याद दिलाई और बताया कि उनकी वेशभूषा क्या व कैसी होती थी?यह भी बताया कि ज्ञान व चरित्र की दृष्टि से हमारे उन पूर्वजों की संसार में कोई समानता नहीं है। उनके विचारों का उस युवक पर प्रभाव पड़ा और उसने अपना सुधार किया। आज भी हम देखते हैं कि आर्यसमाज के अनुयायी अपने घरों में बच्चों, विशेष कर कन्याओं व स्त्रियों के भारतीय वेशभूषा के पक्षधर है और उनके परिवारों में इस दृष्टि से सख्त निर्देश हैं कि भारतीय वेशभूषा का ही प्रयोग हो। जहां तक अन्य सभी संस्थाओं से तुलना की बात है, आर्यसमाज पहले भी और आज भी भारतीय वेशभूषा का सबसे बड़ा समर्थक व पक्षधर है। आज भी हमारे युवक व युवतियों के गुरुकुलों व शिक्षण

माता मुर्ति देवी आर्य समाज नजफगढ़ दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

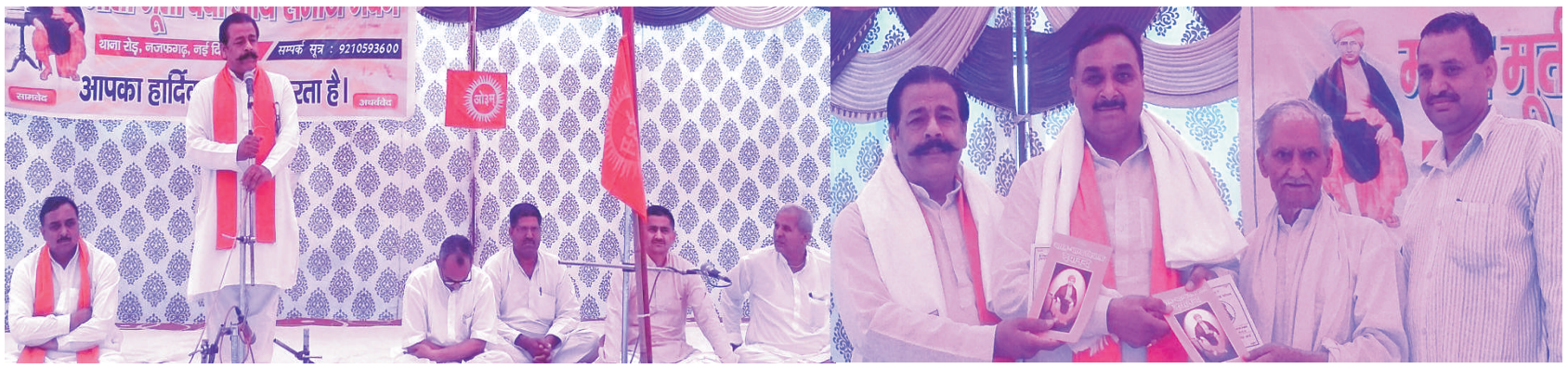

रविवार, 10 अप्रैल 2016,माता मूर्तिदेवी आर्य समाज नजफगढ़,दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक 8,9,10 अप्रैल 2016 को सोल्लास सम्पन्न हुआ । बहिन पुष्पा शास्त्री के ओजस्वी प्रवचन हुए व वेदपाल आर्य(बड़ौत) के मधुर भजन हुए । चित्र में–सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए । मंच पर प्रान्तीय संचालक रामकुमार सिंह आर्य,आचार्य जितेन्द्र जी(रोहतक),आर्य निरंजन,महेश आर्य आदि । द्वितीय चित्र–डा.अनिल आर्य व रामकुमारसिंह का शाल व स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान करते समाज के प्रधान चौ.रघुनाथसिंह आर्य । चौ.रघुनाथसिंह आर्य ने कुशल संचालन किया ।

आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर,नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 10 अप्रैल 2016,आर्य समाज,शाहबाद मोहम्मदपुर,नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव दिनांक 8,9,10 अप्रैल 2016 को सोल्लास सम्पन्न हुआ । प.रामनिवास आर्य(पानीपत) के मधुर भजन हुए । चित्र में डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए । द्वितीय चित्र–डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते श्री तेजपालसिंह(पूर्व ए.सी.पी.),चान्दसिंह आर्य(भिवानी),डा.मुकेश सुधीर आदि । मन्त्री मुकेश सुधीर ने कुशल संचालन किया । पूर्व विधायक विजय लोचन, रवि चड्डा,रमेश गिरोत्रा,धर्मपाल आर्य,जगवीरसिंह,रामकुमारसिंह आर्य आदि भी उपस्थित थे ।

राव हरिशचन्द आर्य ट्रस्ट नागपुर ने किया आर्य संन्यासियों व विद्वानों का अभिनन्दन

शनिवार, 9 अप्रैल 2016,नई दिल्ली के मांवलकर हाल में राव हरिशचन्द आर्य चेरीटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा आर्य जगत के विभिन्न विद्वानों स्वामी धर्ममुनि जी,डा.महावीर मीमांसक,ब्र.विश्वपाल जयन्त,आचार्या सूर्या जी आदि का भव्य अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया । चित्र में–डा.अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए । मंच पर राव हरिशचन्द आर्य,आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,स्वामी प्रणवानन्द जी । द्वितीय चित्र–हिमाचल के आचार्य सत्या व चैतन्यमुनि जी का अभिनन्दन करते यशपाल आर्य,राव हरिशचन्द आर्य,स्वामी सुमेधानन्द जी(सांसद),स्वामी प्रणवानन्द जी,महीपालसिंह व डा.अनिल आर्य । कुशल संचालन डा.धर्मेन्द्र शास्त्री ने किया ।

संस्थाओं में भारतीय वेशभूषा का ही प्रचलन व प्रभाव है। हां, डी.ए.वी. कालेज को आर्यसमाज के वेशभूषा विषयक प्रभाव में सम्मिलित स्वीकार नहीं किया जा सकता।

किसी मनुष्य जाति व धर्म के मानने वाले लोगों की अपनी परम्परायें व रीति–रिवाज भी होते हैं जो कि उनकी संस्कृति का अंग कहलाते हैं। भारतीय धर्म व संस्कृति की बात करें तो यहां भी अनेकानेक परम्परायें व रीति–रिवाज प्रचलित हैं जिनके संशोधन व सुधार सहित अनावश्यक का त्याग तथा भूली हुई आवश्यक परम्पराओं का पुनः प्रचलन स्वामी दयानन्द जी व आर्यसमाज ने किया है। स्वामी दयानन्द ने समस्त वैदिक परम्पराओं को पंच महायज्ञों व 16 वैदिक संस्कारों में ढ़ालने सहित भारत में मनायें जाने वाले मुख्य पर्वों होली, दीपावली, शिवरात्रि आदि पर्वों को वैदिक विधि से मनाये जाने का शुभारम्भ किया। वैदिक परम्पराओं में प्रातः व सायं ईश्वरोपासना, दैनिक अग्निहोत्र, माता–पिता–आचार्य–वृद्धों आदि का सम्मान, पशु–पक्षी–कीट–पतंगों आदि को अन्न व भोजन कराना तथा अतिथियों का सत्कार करने सहित गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों को प्रचलित किया। आर्यसमाज अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि का पक्षधर है और सभी मनुष्यों को वेदादि ग्रन्थों सहित सभी प्रकार के ज्ञान की पुस्तकों को नियमित रूप से पढ़ने व पढ़ाने को जीवन का अनिवार्य अंग मानता है। आर्यसमाज वेदादि सभी लाभकारी ग्रन्थों के नियमित सवाध्याय का प्रबल समर्थक है। वैदिक संस्कृति में अच्छी परम्पराओं का प्रचलन व अनावश्यक एवं बुरी प्रथाओं के नियंत्रण का आर्यसमाज समर्थक है। इस क्षेत्र में आर्यसमाज ने बहुमूल्य योगदान दिया है। आर्यसमाज की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त सत्य मान्यताओं व तर्कों पर आधारित हैं जिनसे समाज लाभान्वित होता है। इसी कारण सभी लोग अपनी अपनी ज्ञान की योग्यता के अनुसार इसे पसन्द करते व अपनाते हैं। यही कारण है कि आर्यसंमाज भारत तक ही सीमित न होकर एक विश्वव्यापी संगठन है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का युवा निर्माण अभियान शुरू

अपने बच्चों को ईश्वर भक्त, मातृ पितृ भक्त, देश भक्त, चरित्रवान बनाने के लिये अपने निकट के शिविर में अवश्य भेजे:–

1. नोएडा–राष्ट्रीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 11 जून से 19 जून 2016 तक, स्थानः ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर–44, नोएडा, सम्पर्कः सौरभ गुप्ताः 09971467978
2. दिल्ली–आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 22 मई से 29 मई 2016, स्थानः आर्य समाज, विशाखा एनक्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, सम्पर्क–उर्मिला आर्याः09711161843
3. फरीदाबाद–आर्य युवक निर्माण शिविर, दिनांक 5 जून से 12 जून 2016 तक, श्रद्धा मन्दिर स्कूल, सैक्टर–88, फरीदाबाद, सम्पर्कः वेदप्रकाश शास्त्री : 09818045919
4. जम्मू–कश्मीर–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 19 जून से 26 जून 2016, आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू.सम्पर्कः सुभाष बब्बर : 09419301915
5. मध्य प्रदेश–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर, दिनाक 8 मई से 15 मई 2016, स्थानः डी.ए.–577, दत अखड़ा, उज्जैन, मध्य प्रदेश, सम्पर्कः आ. भानुप्रताप वेदालंकार : 09977987777
6. हरियाणा–आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 5 जून से 12 जून 2016, ग्राम–दोहाना खेरा, नरवाना, जिला जीन्द, सम्पर्क : अश्वनी आर्य : 09255422877
7. पलवल–आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर, दिनांक 12 जून से 19 जून 2016 तक, पलवल, हरियाणा, संयोजकः स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती : 09416267482

आर्य समाज मॉडल बस्ती, करोल बाग, दिल्ली का वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

रविवार, 3 अप्रैल 2016,आर्य समाज,माडल बस्ती,दिल्ली का वार्षिकोत्सव 1,2,3 अप्रैल 2016 को सोल्लास सम्पन्न हुआ । चित्र में सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान व परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ओ३म् ध्वज फहराते हुए। साथ में सतीश विज,ओमप्रकाश अरोड़ा (ओमजी ओम),मन्त्री आदर्श आहुजा,गोपाल जैन,रविदत आर्य,राजेश आर्य । द्वितीय चित्र–प्रधान श्री अमरनाथ गोगिया का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,साथ में प्रदीप गोगिया,आदर्श आहुजा,राजेश आर्य,गोपाल जैन व सुधीर घई। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के प्रवचन हुए व गौरव शास्त्री के मधुर भजन हुए । श्री वेद गोगिया, आचार्य जयप्रकाश शास्त्री, आरती गोगिया ने व्यवस्था सम्भाली ।

आर्य समाज मयूर विहार फेज-2 में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

रविवार, 10 अप्रैल 2016,आर्य समाज,मयूर विहार,फेज–2 में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न हुआ। पं.भूदेव आर्य,आचार्य श्यामदेव के प्रवचन हुए व पं.राजवीर शास्त्री के मधुर भजन हुए। चित्र में.डा.अनिल आर्य के साथ–मन्त्री श्री ओमप्रकाश पाण्डेय,प्रधान हरवंशलाल शर्मा,विकास गोगिया,महेन्द्र भाई,वेदप्रकाश आर्य,यज्ञवीर चौहान,रामकुमारसिंह आदि । द्वितीय चित्र–शिक्षक शिविर गुरूकुल खेड़ाखुर्द में आचार्य सुधांशु,महेन्द्र भाई,सन्तोष आर्या, विश्वनाथ आर्य,वेदप्रकाश आर्य,सूर्यदेव आर्य व सौरभ गुप्ता ।

आर्य समाज सोहन गंज व यमुना विहार दिल्ली का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 10 अप्रैल 2016,आर्य समाज सोहन गंज,घन्टाघर,दिल्ली में नवसम्वत् पर्व धूमधाम से मनाया गया । श्री अशोक नागपाल के मधुर भजन हुए । चित्र में मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य का अभिनन्दन करते संरक्षक श्री प्रेमसागर गुप्ता(90 वर्ष),धर्मेन्द आर्य,प्रधान नेत्रपाल आर्य,ओम सपरा,काका हरिओम,रामकुमार सिंह आदि । द्वितीय चित्र–आर्य समाज,यमुना विहार,दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर डा.प्रियम्वदा के प्रवचन हुए व आर्ष कन्या गुरूकुल नजीबाबाद की बालिकाओं के मधुर भजन हुए । चित्र में–डा.प्रियम्वदा को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य,प्रधान डा.सुबोध शर्मा,वीरबहादुर ढींगरा,कृष्ण कुमार सिंघल,मन्त्री योगेश आर्य व विश्वमित्र रहेजा ।

पश्चिमी पंजाबी बाग में वैदिक सत्संग व परिषद् के कर्मठ शिक्षक

रविवार, 3 अप्रैल 2016,पश्चिमी पंजाबी बाग,दिल्ली के आर्य परिवारों द्वारा शिवाजी पार्क में भव्य वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया । इस अवसर पर डा.अनिल आर्य के साथ आचार्य सूर्यदेव शास्त्री,डा.विपिन खेड़ा,सुरेन्द्र मानकटाला,आशीष मल्होत्रा,राजेश आर्य,खेत्रपाल जी आदि व द्वितीय चित्र में परिषद के शिक्षक।

तपोवन देहरादून चलो

वैदिक साधन आश्रम,तपोवन,देहरादून का ग्रीष्मोत्सव यज्ञ व स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस समारोह 11 मई से 15 मई 2016 तक मनाया जायेगा। सभी आर्य जन सपरिवार दर्शन देवें।
–दर्शन कुमार अग्निहोत्री, प्रधान प्रेमप्रकाश शर्मा,मन्त्री

आर्य समाज सुन्दर विहार का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज,सुन्दर विहार,दिल्ली का वार्षिकोत्सव 22 अप्रैल से 24 अप्रैल 2016 तक मनाया जा रहा है, वैदिक विद्वान डा.महेश विद्यालंकार,आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा के प्रवचन होंगे व जितेन्द्र सुकुमार आर्य के भजन होंगे । आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं । –अमरनाथ बत्रा,मन्त्री

जम्मू में वीरांगना दल का शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर दिनांक 5 जून से 12 जून 2016 तक जम्मू शहर में लगेगा । कृपया 15 मई तक अपना स्थान आरक्षित करवा लें । –मृदुला चौहान,संचालिका,सम्पर्क:9810702760

व्यास आश्रम हरिद्वार का उत्सव सम्पन्न

हरिद्वार व्यास आश्रम सप्तसरोवर का 63 वां वार्षिकोत्सव 1 अप्रैल से 5 अप्रैल 2016 तक सोल्लास सम्पन्न हुआ । डा.महावीर अग्रवाल,स्वामी दिव्यानन्द जी,डा.जयदेव वेदालंकार,डा.प्रतिभा पुरन्धी,डा.शिवकुमार शास्त्री,डा.महेश विद्यालंकार,सरोज आर्या के उद्बोधन हुए । सुकृति चौधरी व दीपाली अधिकारी के भजन हुए । माता विमला गुप्ता व शान्ति गुप्ता ने संचालन किया ।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष: 41548503 मो. 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक:** दिनेश आर्य मोबाईल: 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल: 9958889970